बंधवाड़ी के बाद अब सीही के सत्यानाश की तैयारी

ईको ग्रीन-सत्ताधारी नेताओं के गठजोड़ के खिलाफ जनता धरने पर

फ़रीदाबाद (म.मो.) पूरी दुनिया में कचरा निस्तारण कोई समस्या न होकर एक उद्योग का रूप ले चुका है। इसके चलते कचरा एक बोझ न होकर कच्चे माल के रूप में एक संसाधन बन चुका है। इस से बायोगैस, बिजली व कम्पोस्ट खाद जैसे बहुमूल्य उत्पाद तैयार किये जा रहे हैं। परन्तु यही कचरा न केवल फ़रीदाबाद में बल्कि दिल्ली समेत भारत के अधिकांश शहरों में जनता के लिये मुसीबत बना हुआ है।

फ़रीदाबाद व गुड़गांव की इस साझी मुसीबत से छुटकारा पाने के नाम पर गुड़गांव रोड पर बंधवाड़ी गांव की करीब 10-15 एकड़ ज़मीन सरकार द्वारा कब्जा कर एक कम्पनी को दे दी गयी। कम्पनी से समझौता हुआ था कि वह इस कूड़े से बिजली बना कर निगम को बेचेगी। कम्पनी की ओर से दिया गया मनमाना भाव, 15 रुपये प्रति यूनिट भी नगर निगम ने स्वीकार कर लिया था। इसके लिये 70 करोड़ की लागत से मशीनरी आदि भी लगाई गयी थी। परन्तु न तो कभी एक यूनिट बिजली पैदा हुई और न ही कम्पोस्ट या कोई अन्य उत्पात। हां, कुछ समय बाद आग लगने से सारी मशीनरी को जला हुआ घोषित करके नगर निगम फ़ारिग हो गया।

उसके बाद चीनी कम्पनी ईको ग्रीन को लाया गया। पूरे शहर का कचरा घर-घर से उठा कर बंधवाड़ी ले जाने, वहां उसका निस्तारण करने के लिये कम्पनी से करोड़ों रुपये का अनुबंध किया गया। इस कम्पनी ने न तो सही ढंग से शहर का कचरा उठाया न ही उसके निस्तारण की कोई व्यवस्था की, बल्कि बंधवाड़ी में कचरे का पहाड़ और भी ऊंचा कर दिया। इस से 10-10 किलोमीटर तक बसी ग्रामीण आबादी दुर्गंध व भूजल के दूषित होने से परेशान है। इसके विरुद्ध उनकी चीख-पुकार सुनने वाला कोई नहीं।

कचरे के पहाड़ की ऊंचाई अधिक हो चुकने के चलते निगम ने नहर पार बन रहे सेक्टर 74-75 के निकट सीही गांव के रकबे में 10 एकड़ पंचायती ज़मीन, जो अब नगर निगम की हो चुकी है, की चारदीवारी करके वहां कचरे का एक और पहाड़ खड़ा करने की तेयारी कर ली है। संघ एवं भाजपा से झूठ बोलने की कला में पारंगत हो चुके बल्लबगढ़ से विधायक एवं मंत्री मूल चंद तथा उनके भाई टिप्पर

सीही के पर्यावरण को बचाने के लिए ग्रामीण सरपंच महीपाल (दाएं) के कुशल नेतृत्व में आंदोलन चला रहे हैं

चंद ने चारदीवारी करते वक्त स्थानीय लोगों को बहकाया कि यहां मलवे से टाइलें बनाने का काम चलेगा। लेकिन कुछ दिन बाद जब पोल खुलने लगी तो यही नेता कहने लगे कि यहां मशीनरी लगा कर बंधवाड़ी से कचरा लाकर उसका विधिवत निस्तारण किया जायेगा। आज की जनता इतनी बेवकूफ़ तो रह नहीं गयी है जो इस तरह की बहकाई में आ जाये, झट से सारा षडयंत्र समझ गयी। इसे नाकाम करने के लिये न केवल सीही गांव के लोग बल्कि साथ लगते गांव मिर्जापुर के लोग और सेक्टर में बन चुकी व बन रही रिहायशी सोसायटियों के लोग भी बड़ी संख्या में जुड़ते जा रहे हैं।

इस षडयंत्र को विफ़ल करने के लिये मिर्जापुर के सरपंच महिपाल के नेतृत्व में उक्त सभी लोग उस चारदीवारी के भीतर तम्बू लगा कर धरने पर बैठ गये हैं जहां कचरे का पहाड़ खड़ा करने की साजिश है। धरना स्थल के लगभग सामने रिसॉर्ट सोसायटी के महासचिव राहुल नागपाल ने बताया कि एनजीटी की ओर से कचरा निस्तारन स्थल बनाने के लिये कुछ गाइड लाइन्ज़ हैं, जिनके मुताबिक इसे आबादी, हाईवे, स्कूल, अस्पताल हवाई अड्डे आदि से दो किलोमीटर से लेकर 20 किलोमीटर तक दूर होना चाहिये। परन्तु यह स्थल तो बिल्कुल आबादी व आबादी के बीच बनने वाले स्कूलों व अस्पतालों के बीच में पड़ता है। यदि यहां कचरा स्थल बनाने की घोषणा पहले से होती तो वे लोग कभी भी यहां अपना घर नहीं बनाते। यहां कचरा स्थल बनाना उनके साथ बड़ा-भारी धोखा होगा क्योंकि यहां कचरा आने के बाद रहना दूभर हो जायेगा।

स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर का कहना है कि कहीं तो यह कचरा स्थल बनेगा ही; ठीक है तो फ़िर उस 'कहीं' को अपने घर के नजदीक या अपने गांव मेवला महाराजपुर में ही क्यों नहीं बनवा लेते, पता चल जायेगा कि लोग आपको कितनी 'दुआऐं' देंगे। यह ठीक है कि कचरा कहीं तो डलेगा, लेकिन जिस तरह से सरकार इसे डालना चाहती है उस तरह से अब कहीं भी कोई भी नहीं डालने देगा मंत्री महोदय। इसके डालने और निस्तारण का आज वैज्ञानिक तरीका उपलब्ध है, पूरी तकनीक उपलब्ध है जिसके इस्तेमाल से यही कचरा बहुउपयोगी बन सकता है।

इसका बेहतरीन उदाहरण इसी शहर में सेकटर 13 स्थित इन्डियन ऑयल ने प्रस्तुत करके दिखा दिया है। इसकी विस्तृत रिपोर्ट 'मज़दूर मोर्चा' के 12-18 जनवरी 2020 के अंक में प्रकाशित की थी। इस में बताया गया था कि किस प्रकार एक छोटा प्लांट लगा कर पांच टन (गीले) कचरे से रसोई गैस बनाई जा रही है। इन्डियन ऑयल ने करीब पांच करोड़ रुपये खर्च करके यह प्लांट लगा कर नगर निगम के हवाले करना चाहा था। परंतु नगर निगम ऐसे 'फिजूल' के कामों में कोई रूचि नहीं रखता। इनकी रूचि केवल उन्हीं कामों में होती है जहां ये मोटी डकैती मार सकें। और तो और जो निगम कचरे का पहाड़ खड़ा कर सकता है वह इस प्लांट को चलाने के लिये पांच टन गीला कचरा तक सप्लाई नहीं कर सका। इसे लेकर उपायुक्त यशपाल यादव ने निगम वालों को 'कारण बताओ' नोटिस भी जारी किया था। लेकिन ढाक के वहीं तीन पात ।

हरामखोरी व रिश्वतखोरी पर आधारित इस व्यवस्था में, जहां राजनेताओं व अफ़सरशाही में इस बात की होड़ लगी हो कि कौन कितना बड़ा लुटेरा है वहां जनहित का कोई भी काम होना संभव नहीं। जनहित के नाम पर ये लोग योजनाओं की घोषणा व शुभारम्भ तो करते हैं परन्तु अन्ततः ये योजनायें जन-धन को लूटने के षडयंत्र ही साबित होते हैं।

यदि इनकी नीयत साफ़ हो जनहित की जरा भी परवाह हो तो इसी भारत देश में ऐसी-ऐसी कम्पनियां मौजूद है जो वैज्ञानिक ढंग से दिन-प्रति दिन कचरे का निस्तारण करके इससे उपयोगी उत्पाद तैयार कर सकते हैं। परन्तु यहां तो राजनेताओं व अफ़सरों को सदैव उन कम्पनियों की तलाश रहती है जो उनकी जेबें भर सकें।

खबर मरम्मत

जुम्मन मियां पंक्चर वाले

फ़रीदाबाद पुलिस रोज दौड़ेगी पांच किलोमीटर

फ़रीदाबाद पुलिस ने अपने कर्मियों को चुस्त दुरूस्त रखने के लिये एक अभियान शुरू करने का फैसला किया है जिसके तहत हर पुलिसकर्मी रोज़ाना पांच किलोमीटर दौड़ेगा। जो दौड़ नहीं सकेगा वो वॉक करेगा यानी तेज चाल से चलेगा। पुलिस आयुक्त ओपी सिंह ने इसे 'एवरी वन एवरी डे वॉक रन पांच कि.मी.' नाम दिया है। उनके अनुसार उन्होंने ये कार्यक्रम डीजीपी मनोज यादव से प्रेरणा लेकर किया है।

सीपी साहब निश्चित रूप से एक पुलिसकर्मी को अपनी ड्यूटी सही निभाने के लिये फिट रहना जरूरी है और नियमित दौड़ या वॉक उन्हें फिट रखेगा। पर 24 घण्टे नहीं कई बार तो 72 घण्टे तक लगातार ड्यूटी करने वाले पुलिसकर्मी इसके लिये समय कब दे पायेंगे। कहीं ऐसा तो नहीं कि डीजीपी की चापलूसी में सिर्फ़ ये घोषणा कर दी हो। इसके पहले बीट सिस्टम लागू करने और बीट कांस्टेबल को साईकिल पर गश्त करने के तुगलकी फ़रमान तो फेल हो ही चुके हैं। बाकि पुलिस दौड़ कितनी लगायेगी ये भी जल्द ही पता लग जायेगा। इससे बेहतर होता कि पुलिस की ड्यूटी आठ घण्टे की करवाने की कोशिश की जाती तो आधी पुलिस तो वैसे ही फिट हो जाती।

विज को रेप से ज्यादा 'आइटम' शब्द से पीड़ा

हरियाणा के गृहमंत्री विज ने सोमवार को आरोप लगाया कि मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने उपचुनाव में भाजपा उम्मीदवार इमरती देवी के बारे में अश्लील शब्द बोले हैं। बता दें कि कमलनाथ ने उन्हें 'आइटम' कहा था। विज ने एक ट्वीट कर कहा कि ''लाख छुपाओ छुप न सकेगा राज है इतना गहरा, दिल की बात बता देता है असली नकली चेहरा।''

अपने ही प्रदेश में बुटाना में 10 पुलिस वालों द्वारा एक दलित नाबालिग से रेप के घिनौने कांड पर गृहमंत्री होते हुए एक शब्द न बोलने वाले विज को दूसरे प्रदेश में सिर्फ़ 'पता नहीं क्या आइटम है' बोलने से बहुत पीड़ा पहुंची। गृहमंत्री जी, कमलनाथ का तो पता नही इस व्यवहार ने आपका असली चेहरा जनता के सामने ला दिया है कि आपको महिलाओं की इज्जत की चिंता नहीं आप इस पर सिर्फ़ राजनीति करते हैं। आपके लिये ये सिर्फ़ चुनावी मुद्दे हैं। हरियाणा के बरोंदा हल्के में बुटाना में बलात्कार पर बेशर्म चुप्पी और मध्यप्रदेश में सिर्फ़ आइटम कहने पर हंगामा।

बिहार-तुम मुझे वोट दो मैं तुम्हें फ्री वैक्सीन दूंगा

बिहार के लिये बीजेपी का घोषणापत्र (संकल्प पत्र) जारी करते हुये वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि हम बिहार को कोरोना वायरस के लिये फ्री वैक्सीन देंगे। उन्होंने फ्री पर जोर देते हुए कहा कि यह हमारे संकल्प पत्र में पहले नम्बर पर लिखा हुआ है। यानी कि सभी बिहारियों को पूरे देश में सबसे पहले कोरोना से बचाव का टीका लगाया जायेगा।

निर्मला ताई बिहार को फ्री टीका लगाने का एहसान इस तरह लाद रही हो तो क्या देश के बाकि लोगों को पैसे लेकर वैक्सीन लगाया जायेगा ? या फ़िर वोटों के लिये, दो करोड़ नौकरी और 15 लाख रुपये की तरह ये भी एक जुमला है। और वैसे भी जब तक वैक्सीन तैयार होगा तब तक बंगाल का चुनाव सर पर आ जायेगा और बिहारी बीजेपी की खाट खड़ी कर चुके होंगे। तो उनको कैसा टीका देना-फ्री में हो या पैसों में।

नेहरू कॉलेज फरीदाबाद में नये प्रिंसिपल की नियुक्ति

डा. एमके गुप्ता : *रहेगी इन पर भी नजर*

फ़रीदाबाद (म.मो.) गतांक में प्रकाशित किया गया था कि किस तरह एक नाकारा व्यक्ति को इतने बड़े कॉलेज के प्रिंसिपल की कुर्सी पर थोप दिया गया था और इस कुर्सी पर बैठ कर वे क्या गुल खिला रहे थे। खबर प्रकाशित होने के मात्र 48 घंटे में इस कॉलेज को महेंद्र कुमार गुप्ता के रूप में नियमित प्रिंसिपल मिल गया है। इस से पहले वे नवनिर्मित कई छोटे से महिला कॉलेजों में तैनात रहे हैं।

खबर प्रकाशित होने से पीड़ित प्रिंसिपल की कुर्सी पर पहले से बैठे ओम प्रकाश रावत 'मोर्चा सम्पादक' के पास पहुंचे और जानने का प्रयास किया कि उनके विरुद्ध 'झूठे आरोप' किसने लगाये हैं ?

नये प्रिंसिपल एम के गुप्ता के बारे में उनका कहना था कि उनके विरुद्ध तो पहले से ही काफ़ी शिकायतें हैं और वे मोहना से आते वक्त अपना चार्ज भी यूं ही किसी को दे आये। रावत शायद नहीं जानते कि चार्ज किसको दिया जाना है यह मुख्यालय से ही तय होकर आता है। आमतौर पर प्रिंसिपल अपनी मर्जी से किसीको चार्ज नहीं दे सकता। रही बात गुप्ता के विरुद्ध शिकायतों की तो जब भी उनके विरुद्ध कुछ भी जानकारी में आयेगा तो उसे अवश्य प्रकाशित किया जायेगा।

बार-बार अपने ऊपर लगे आरोपों का खंडन करने व खबर का स्रोत जानने के प्रयास में लगे रावत को सम्पादक ने 'मज़दूर मोर्चा' की कार्य शैली बताते हुए कहा कि यहां किसी के कहने सुनने पर खबर नहीं लगती पूरी जांच-पड़ताल के बाद एवं पुष्टि करने के बाद ही खबर लगाई जाती है। इस मामले में भी 'मोर्चा' टीम ने कॉलेज स्टाफ़ के करीब दो दर्जन लोगों से बात-चीत करके पूरी सच्चाई खोजने के बाद ही खबर प्रकाशित की थी।

उधर कॉलेज की ही प्रोफेसर रूचिरा खुल्लर ने सम्पादक से फोन पर सम्पर्क करके शिकायत की कि अखबार ने उनका पक्ष जाने बिना ही उनके बारे में झूठी बातें लिख दी हैं। प्रोफेसर रूचिरा को रूचि भी मज़दूर मोर्चा की खबर का स्रोत जानने में ज्यादा थी। उनको भी बताया गया कि मज़दूर मोर्चा पुष्टि करने के बाद ही खबर छापता है और अगर उनको इस बारे में कुछ भी कहना है तो वह मज़दूर मोर्चा को लिखित में भेज दें, मोर्चा उसको शब्दशः प्रकाशित कर देगा।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06